Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 25-06-2020; Accepted: 10-07-2020; Published: 26-07-2020
Volume 1; Issue 2; 2020; Page No. 19-20

डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक चिन्तन

के.पी. आजाद
सहायक प्राध्यापक–समाजशास्त्र, शासकीय महाविद्यालय, रामपुर नैकिन, जिला सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
डॉ. भीमराव अम्बेडकर का चिन्तन सामाजिक न्याय का मुख्य स्वर था कि मानव मात्र की मूल प्रतिष्ठा उसके अधिकारों को मिलने में है। इससे समाज में समुचित एवं सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा। भारतीय समाज में समाजशास्त्रीय अध्ययन के प्रारम्भ से पहले ही डॉ. अम्बेडकर ने जातिव्यवस्था का मूल रूप से नृवंशशास्त्रीय और समाज से जुड़ें मुद्दों पर शोध आलेख लिख कर समाज की समस्या को प्रस्तुत किया, क्योंकि न्याय की संकल्पना भारत के परम्परागत सामाजिक चिन्तन को सर्वश्रेष्ठ तत्वों के रूप में समाहार करना था। नहीं तो रूसी क्रांति द्वारा प्रस्तुत समाजवादी और साम्यवादी चिन्तन के सर्वश्रेष्ठ तत्व सामने आयेगें। इन्हीं उद्देश्यों से सामाजिक न्याय की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का कार्य बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडर ने किया। समाज में रहने वाले सभी व्यक्ति को बिना उसके धर्म व जातियों को ध्यान में रखे ही। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने का अथक प्रयास किये, जिससे लोगों को भोजन, कपड़ा और मकान जैसी छोटी जरूरतों को पूरा किया जा सकें। इससे प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक एवं सामाजिक विकास का समुचित अवसर मिले। सामाजिक न्याय का उद्देश्य है कि सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को हर सम्भव विकास के अवसर से वंचित रखा गया है। उन्हें भी विशेष अवसर प्राप्त हो सकें। इससे सामाजिक व्यवस्था को अधिक मानवीय और न्यायसंगत बनाया जा सकता है। डॉ. आर.एन. मुखर्जी के अनुसार "सामाजिक जीवन की समस्याओं का अस्तित्व सदा से ही था और सदा ही बना रहेगा।"[1]

मूल शब्दः यायसंगत, "सामाजिक, समस्याओं, डॉ. भीमराव अम्बेडकर

प्रस्तावनाः प्रविधिः इस शोध पत्र में द्वितीयक शोध सामाग्री का समावेश करते अध्ययन किया गया है। इसे साथ–साथ समाज सेवियों, समाज चिन्तकों आदि के विचारों को समझने के उपरान्त शोध पत्र में अध्ययन का आधार और मजबूत हो जाता है।

समस्या
प्रत्येक सदियों में समय के अनुसार मानव की समस्याओं में परिवर्तन होता है। ये भी सच है कि प्रश्नहीन या समस्या विहीन समाज का अस्तित्व असंभव है। मनुष्य यदि वह वैज्ञानिक प्रगति के बारे में सोचे या अतीत के बारे में सोचे इन सभी में कहीं–न–कहीं वर्तमान की समस्याओं पर विचार करना अधिक उचित होता है। वर्तमान की समस्या का निदान करने के बारे में प्रत्येक व्यक्ति सोचताा है और कहा जाता है कि भविष्य की चिन्ता तो पाखण्डी लोग करते हैं। भविष्य किसी भी प्राणी के लिए क्या होगा यह प्रश्नों का विषय है?

उद्देश्य
सामाजिक अन्याय व सरकार के शोषण के विरुद्ध डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर ने निम्न उद्देश्यों को लेकर विमर्श करते रहें।

- बिना किसी भेदभाव के मतदान का अधिकार प्रदान करना।
- दलित वर्ग के विकास और राजनैतिक प्रतिष्ठा समाज को उत्थान हेतु लोक सभा और विधान सभाओं में आरक्षण की व्यवस्था।
- नौकरियों में आरक्षण प्रदान कर प्रतिभा का धनी व्यक्ति केन्द्र और राज्य शासन के विभिन्न पदों पर आसीन हो सके।
- भारतीय संविधान की धाराओं में छुआछूत को एक कानूनी अपराध घोषित किया गया, जिससे कोई भी व्यक्ति निर्धन, गरीब, मजदूर का शोषण और अपमान न कर सकें।
- दलित छात्रों को देश से लेकर विदेश तक की शिक्षा में विशेष सुविधाएँ प्रदान करना, जिससे समाज में प्रतिभावान छात्र ज्ञान को सामुद्र की भाँति विस्तारित कर सकें।
- भारतीय शासन व्यवस्था और समाज को निष्पक्ष न्याय प्रदान करने हेतु अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ावर्ग आयोग की स्थापना।

समाधान
राष्ट्र को क्रान्तिकारी, समाज–सुधारक, प्रगतिशील व मनीषियों की किसी भी युग में कमी नहीं रहीं। समाज सुधारक के रूप में दलितोद्वार के विभिन्न प्रयासों को सफल बनाने में जितना योगदान डॉ. अम्बेडकर है। उतना और किसी का नहीं है। इस कार्य को पूरा करने में दूरदर्शी, समाज चिन्तक, राजनीतिज्ञ आदि ने भी कदम उठाया किन्तु उस मुकाम तक नहीं पहुँच पाये। इस प्रकार की विषमताओं के परिणाम स्वरूप सभी को भेदभाव के दंष को झेलना पड़ा। इसके उपरान्त भी ऐसा प्रतीत होता है कि न जाने कितनी सदीं लग जायेगी। भेदभाव से मुक्ति प्रदान करने में।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने जीवन की स्मृतियों और अनुभूतियों के द्वारा मानवीय मूल्यों का अथाह संकलन किया। उस पर बहुत ही अधिक मंथन करके समाज को ज्योति दिखाने में जीवन समर्पित कर देते हैं। "समाज में छुआछूत, जातिवाद, वर्गभेद, विषमता, शोषण की ओर जनसमुदाय का ध्यान आकर्षित किया। शोषित लोगों के मन, मस्तिष्क और भावना में शोषक के विरूद्ध क्रान्तिकारी विचार पैदा किये। एक नयी चेतना जागृत की दलितों को सोये हुए आत्म–सम्मान और आत्मस्वाभिमान को जगाया।"[2]

भारतीय समाज में सामाजिक अन्याय का सबसे ज्यादा शिकार अछूत वर्ग होता है। देश की समस्या का प्रमुख कारण शिक्षा और आर्थिक रूप से पिछड़ापन रहा है। इसीकारण समाज की स्थिति दासों की तरह

होती जा रही हैं। दासों के साथ कम से कम छुआछूत, असमानता, हीनता आदि का वर्ताव किया जाता रहा है। इससे आये दिन समाज का प्रबुद्धजीवी वर्ग उनके अधिकारों के लिए लड़ता रहा है। यहाँ तक दासों में कम से कम दासो के साथ अछूतों जैसा व्यवहार नहीं होता था, किन्तु उन्हें अछूत माना जाता था। अछूतों की दुर्दशा एवं दासता के लिए प्रमुख रूप से शास्त्रीय निर्योग्यताएँ थोप दी गई थी। यह समाज शिक्षा से वंचित होने के कारण उसके अन्दर कूट–कूट कर अन्धविश्वास भर दिया जाता था। किसी भी व्यक्ति के समुचित विकास हेतु अर्थ, और शिक्षा का होना आवश्यक है। ये दोनों योग्यता इनके पास नहीं थी। उन दिनों शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। इसके साथ–साथ इन्हें शस्त्र रखने का भी अधिकार नहीं था।

वर्तमान भारत यंत्रिक व वैज्ञानिक विकास की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इस जगत् के विकास के लिए यंत्रिक कदम बहुत तेजी से बढ़ाया गया हैं, किन्तु मानव का विकास उस तरह से नहीं हो पाया कि वह स्वयं के साथ दूसरों की मदद कर सकें। समाज में कई वर्ग उत्पन्न हो गये, जो एक–दूसरे को अपने से छोटे का शोषण करते रहें। यह बड़ी ही विचारणीय बात है कि समाज किस दिशा में जा रहा है। इसका अनुमान डॉ. बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर जी ने किया था।

सामाजिक रूप से छुआछूत सबसे बड़ी समस्या रही है। उस समस्या को लेकर राजाराम मोहन राय से लेकर गाँधी आदि तक ने विचार किया। किन्तु समाज सुधारकों में से जो डॉ. अम्बेडकर ने संघर्ष किया। वह सबसे महत्वपूर्ण और बुनियादी तौर पर अधिक गम्भीर था। यहाँ तक कई विचारकों ने समाज को सुधारने में अछूत समस्या को लेकर जो भी मानवीय रूख अपनाया वह उनके चिन्तन तक सीमित रह गया। जबकि डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक चिन्तन दलित समस्या, अछूतों का उद्वार आदि पर बड़ी गम्भीरता से सुलझाने का प्रयास किया।

उन्होंने इन समस्याओं को स्पष्ट रूप से निवारण करने की ठान ली थी। अछूत परिवार के कारण कई क्षेत्रों में कोई अस्तित्व नहीं रहा क्योंकि भारतीय समाज की समस्या विकृतियों से भरी थी। वहाँ शिक्षा और आर्थिक पहलू नगण्य थे। इसीलिए डॉ. अम्बेडकर चहते थें कि दलितों के उद्वार करके उन्हें ही सभी व्यक्तियों के समान आत्म सम्मान प्राप्त हो सके। इनके विकास हेतु उन्होंने अथक प्रयास किया।

डॉ. अम्बेडकर ने "सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए जाति और वर्ण व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया, क्योंकि जाति और वर्ण दोनों ही ने समाज में कट्टरता को जन्म दिया है।"[3] समाज के उत्थान के लिए डॉ. अम्बेडकर ने कृषि पर आधारित उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया है। इससे एक बहुत बड़ी आर्थिक मदद मिल सकती है। इसके सम्बन्ध में लोहिया का विचार निजी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर देना चाहिए। इन दोनों विचारकों के आर्थिक चिन्तन को एक समान माना जा सकता हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि इनके चिन्तन में कार्लमार्क्स की विचारधारा का अमिट छाप पड़ा होगा। वे सामाजिक सुधार हेतु आर्थिक परिवर्तन करने के बजाय लोकतांत्रिक रूप से विकसित करना चाहते थें।

"वे पूंजीवादी शोषण के विरोधी थे, किन्तु साहस और प्रतिभा के समर्थक थें, उनके परिवर्तनों का आधार आर्थिक और सामाजिक न्याय प्राप्त करना था।"[4] इससे यह सिद्ध होता है कि किसी भी व्यक्ति की प्रतिभा का जन्म किसी जमींदार, नेता, अफसरशाह या उच्च वर्गों में ही नहीं होता है। बल्कि व्यक्ति अपनी मेहनत के बल पर प्रतिभा को प्रदर्शित कर उच्च पदों को प्राप्त करता है।[5] यह तो पूर्णतः यथार्थ है कोई कितना भी द्वेषु, ईर्ष्या, अपमान, प्रतिभा को नष्ट करने का प्रयास करें, किन्तु व्यक्ति में मेहनत और एक लक्ष्य है तो वह उस पद को आसानी से प्राप्त कर सकता है। वर्तमान समय में ऐसा देखा भी जा रहा है।

डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के उद्वार हेतु पृथक से प्रतिनिधित्व करने की माँग करते हैं।

संविधान निर्माता होने के बावजूद भी तथाकथित भारत के उच्च शिक्षित लोगों और राजनेताओं ने अपने व्याख्यानों में संबोधित किया कि भारत में दलित को संविधान बनानें का अवसर दिया गया है इसके विपरीत किसी भारतीय सुशिक्षित वर्ग ने यह नहीं कहा कि बौद्धिक कुशल और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को संविधान निर्माण समिति का अध्यक्ष बनाया गया। इससे यह सिद्ध किया जा सकता है कि भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर के समय में भारत में जाति प्रथा चरमसीमा पर और निन्दनीय थी।

इस प्रकार की घृणित व्यवस्था महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, कबीर, नानक, रैदास आदि ने समाज से समाप्त करने का अथक प्रयास किया। उनकी विचारधारा थी कि समतामूलक समाज की स्थापना की जाय। इससे ऊँच–नीच के भेदभाव को समाप्त किया जा सकता है। समाज उत्थान के लिए समता को स्थापित करने के लिए समाज चिन्तकों ने अथक संघर्ष किया है।

इन बुराइयों को जड़ से समाप्त करने के लिए उन्होंने योजनाबद्ध और संस्थागत आधार पर एक गतिशील आन्दोलन की शुरूआत करते हैं। वस्तुतः एक सामाजिक क्रांति का बिगुल बजा दिया गया।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. रविन्द्रनाथ मुखर्जी–सामाजिक विचारधारा–कॉम्ट से गाँधी तक, दिल्ली, 1975, पृष्ठ 12
2. डॉ. बी.एल. मेहरदा, डॉ. सुनिता पचौरी, डॉ. रवि प्रकाश मेहरदा, अम्बेडकर और सामाजिक न्याय, रावत पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 61
3. डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा, प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक एवं धाराएँ, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, प्रथम 2009, पृष्ठ 422
4. डॉ. लोकेश कुमार चन्देल, अम्बेडकर और लोहिया का लोकतंत्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2013, पृष्ठ 151
5. ज्ञानचन्द, खिमेसरा, डॉ. अम्बेडकर का आर्थिक चिन्तन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1995, पृष्ठ 137